

मेरे मोले बाबा को इतना ही कहना है इतना --- ॥२॥  
जब तक जियोगे बन्दे तुम्हें शान्ति से रहना है तुम्हें --- ॥२॥

① निर्विकार है रूप मेरा ये मालुम नहीं तुम्हें ये मालुम --- ॥२॥  
फिर इतने विकारों में तुम इस बात का दुख हमको इस बात --- ॥२॥  
निर्विकार तो हो जाओ ले लो विधिकार खाना है ले लो --- ॥२॥  
मेरे मोले बाबा --- जब तक ---

② हर युग में ब्रह्म ने भी निर्विकार को प्रेष्ठ कहा निर्विकार --- ॥२॥  
सभी देवों ने मिलकर के मोले शंकर को प्रेष्ठ कहा --- ॥२॥  
इनकी वाणी को तुम समझो जीवन विधि से सजना है जीवन --- ॥२॥  
मेरे मोले बाबा --- जब तक ---

③ निर्विकार पथ ऊँचा है इसमें ब्रह्म की शक्ति है इसमें --- ॥२॥  
इस पर चलकर जरा देखो इससे जीवन की मुक्ति है इससे --- ॥२॥  
तुम कलयुग से बाहर निकलो आया सतयुग पुराना है आया --- ॥२॥  
मेरे मोले बाबा --- जब तक ---

④ इन विधियों में ईश्वर की शक्ति है पूरी लगी शक्ति है --- ॥२॥  
कलयुग को बदलने में माता भक्ति भी दिल से लगी --- ॥२॥  
बड़ा बौद्ध है धरती पर इससे हँसकर घटना है माता भक्ति --- ॥२॥  
मेरे मोले बाबा --- जब तक ---



५) सुनो सतगुरु में हमेशा सत्य ही रहता है सत्य ही --- ॥२॥  
यहां मिथ्या को स्थान नहीं द्यम से कहता है द्यम से --- ॥२॥  
सब आपस में मिल जाओ गंगा ज्ञान की बहना है गंगा --- ॥२॥  
मेरे भोले बाबा - - - - - जब तक - - - - -

६) " श्री बाबा श्री ने दिल में भोले को बिठाया है भोले --- ॥२॥  
तब इनकी दया ने मुझे ऊंचा उठाया है ऊंचा --- ॥२॥  
एक बार इस दुनिया में अपनी अवस्था जाना है अपनी --- ॥२॥  
मेरे भोले बाबा का इतना ही कहना है इतना ही --- ॥२॥  
जब तक जियोगे बन्दे तुम्हें शान्ति से रहना है तुम्हें --- ॥२॥